पञ्चीकरणप्रकारः

स्थूलभूतानि तु पञ्चीकृतानि। पञ्चीकरणं त्वाकाशादिपञ्चस्वेकैकं द्विधा समं विभज्य तेषु दशसु भागेषु प्राथमिकान् पञ्चभागान् प्रत्येकं चतुर्धा समं विभज्य तेषां चतुर्णां भागानां स्वस्वद्वितीयार्द्धभागपरित्यागेन भागान्तरेषु संयोजनम्। तदुक्तम्—

'द्विधा विधाय चैकैकं चतुर्धा प्रथमं पुनः
स्वस्वेतरद्वितीयांशैर्योजनात्पञ्च पञ्च ते ॥' इति ॥

अस्याप्रामाण्यं नाशङ्कनीयं त्रिवृत्करणश्रुतेः पञ्चीकरणस्याप्युपलक्षणत्वात्। पञ्चानां पञ्चात्मकत्वे समानेऽपि तेषु च 'वैशेष्यात्तद्वादस्तद्वादः' इति न्यायेनाकाशादिव्यपदेशः सम्भवति, तदानीमाकाशे शब्दोऽभिव्यज्यते वायौ शब्दस्पर्शावग्नौ शब्दस्पर्शरूपाण्यप्सु शब्दस्पर्शरूपरसाः पृथिव्यां शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाश्च।

पहले उसका बतलाते हैं]—

पञ्चीकरणप्रकार—आकाशादि पञ्चमहाभूतों के दो-दो भाग किये। फिर उन दशों भागों में से प्राथमिक पाँचों भागों के पुनः चार-चार भाग किये। इस प्रकार सबके पाँच-पाँच भाग हो गये (एक अर्द्धांश तथा चार अष्टमांश)। अब उन सब भागों में से अपने-अपने एक-एक अर्द्धांशभाग को छोड़कर एक-एक भाग (अष्टमांश) दूसरे-दूसरे चारों में मिला दिया। इस प्रकार प्रत्येक महाभूत में आधा अंश अपना और अष्टमांश दूसरे-दूसरे महाभूतों का मिल जाने से प्रत्येक आकाशादि पाँच-पाँच महाभूतों से संयुक्त हो जाते हैं। निम्नलिखित उदाहरण से यह बात और अधिक स्पष्ट हो जायगी—

Scanned with CamScanner

कल्पना किया कि पाँच व्यक्तियों के पास एक-एक रुपया है। प्रत्येक अपने-अपने रुपये की दो-दो अठन्नियाँ कर लीं और एक-एक अठन्नी अपने पास रखकर दूसरी अठन्नी की चार दुअन्नियाँ बना लीं तथा उन चारों दुअन्नियों को शेष चारों व्यक्तियों को दे दिया। यही काम पाँचों ने किया—अपनी-अपनी अठन्नी पास रखकर दुअन्नियों को चारों में बाँट दिया। इस प्रकार प्रत्येक के पास आठ-आठ आने और आ जाने के कारण सबके पास एक-एक पूरा-पूरा रुपया हो गया। इसी प्रकार आकाशादि पञ्चमहाभूतों का अपना-अपना अर्द्धांश तथा शेष चार भूतों का अष्टमांश मिलाकर पञ्चीकृत महाभूत बनते हैं। यही बात पञ्चदशी की निम्नलिखित कारिका में इस प्रकार कही गई है—

'द्विधा विधाय चैकैकं चतुर्धा प्रथमं पुनः।
स्वस्वेतरद्वितीयांशैर्योजनात्पञ्च पञ्च ते॥'

सुरेश्वर वार्तिक में यही बात इस प्रकार कही गई है :—

'पृथिव्यादीनि भूतानि प्रत्येकं विभजेद् द्विधा।
एकैकं भागमादाय चतुर्धा विभजेत्पुनः॥
एकैकं भागमेकस्मिन् भूते संवेशयेत्क्रमात्।
ततश्चाकाशभूतस्य भागाः पञ्च भवन्ति हि॥
वाय्वादिभागाश्चत्वारो वाय्वादिष्वेवमादिशेत्।
पञ्चीकरणमेतत्स्यादित्याहुस्तत्त्ववेदिनः॥

यहाँ यह सन्देह होता है कि छान्दोग्य उपनिषद् में पहले अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथिवी की उत्पत्ति बतला कर इनके त्रिवृत्करण (प्रत्येक के आधे तथा शेष दो के चतुर्थांश-चतुर्थांश) द्वारा ही सृष्टि की उत्पत्ति बतलाई गई है—सेयं देवतैक्षत हन्ताहमिमास्तिस्रो देवताः अनेन जीवेनात्मनाऽनुप्रविश्य नामरूपे व्याकरवाणि'। [छा० ६।३।२]

'तासां त्रिवृतं त्रिवृतमेकैकां करवाणि इति सेयं देवतेमास्तिस्रो देवता अनेनैव जीवेनात्मनाऽनुप्रविश्य नामरूपे व्याकरोत्'। [छा० ६।३।६]

किन्तु यहाँ पर पञ्चीकरण के द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति बतलायी जा रही है। इस शङ्का के समाधानार्थ कहते हैं कि उपनिषद् का त्रिवृत्करण इस पञ्चीकरण का उपलक्षण है, अर्थात् अपना भी बोध कराता है और इस पंचीकरण का भी द्योतक है, क्योंकि सृष्टि की परिपूर्ति के लिए पञ्चमहाभूत

अपेक्षित हैं, अतः छान्दोग्य में अग्नि, जल और पृथिवी का त्रिवृत्करण शेष दो महाभूत—ओकाश और वायु से संयुक्त पञ्चमहाभूतों के पञ्चीकरण का उपलक्षण है।

अब यह सन्देह होता है कि यदि पाँचों महाभूतों में पाँचों के भाग मिले है तो वायु में पृथिवी का अंश होने के कारण उसका चाक्षुष प्रत्यक्ष होना चाहिये। इस प्रकार आकाश में भी जलीय एवं पार्थिव अंश होने के कारण उसका त्वाचप्रत्यक्ष, चाक्षुष प्रत्यक्ष तथा गन्धोपलब्धि होने चाहिये, पर ऐसा नहीं होता। अतः इस सन्देह के निवारणार्थ कहते हैं कि यद्यपि इन पाँचों में पाँचों के भाग मिले हुए हैं, फिर भी प्रत्येक महाभूत में अपना-अपना अंश ही अधिक है इस कारण आकाशादि व्यवहार होता है और अपने-अपने में उनकी-उनकी अधिकता होने के कारण अपने-अपने गुणों के अनुकूल ही उनका उन-उन इन्द्रियों में प्रत्यक्ष होता है। यही कारण है कि पञ्चीकृत आकाश में शब्द; वायु में शब्द और स्पर्श, अग्नि में शब्द, स्पर्श, रूप, जल में शब्द, स्पर्श, रूप, रस और पञ्चीकृत पृथिवी में शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध उत्तरोत्तर अपने-अपने कारणों के अनुसार स्पष्ट प्रतीत होते हैं ॥ १५ ॥

Scanned with CamScanner